सल्तनत कालीन प्रशासन में उल्मावर्ग की स्थिति : एक संक्षिप्त अध्ययन

विजय शंकर यादव*

सल्तनत काल में भारतीय मुस्लिम समाज में उल्मा वर्ग की महत्वपूर्ण स्थिति रही है। उनकी यह स्थिति श्रेष्ठ रहने का कारण उनका धर्म सम्बन्धी पर्याप्त ज्ञान था। फलस्वरूप जनमानस उनको सम्मान की दृष्टि से देखता था।[1] प्रशासन पर इनका अधिक प्रभाव था। पूरे सल्तनत काल में उल्मा वर्ग शासको के कृपापात्र बनकर के सहयोग प्रदान करते रहे। उल्मा वर्ग तर्कशास्त्र, इस्लाम तथा अरबी के धार्मिक ग्रन्थों उदाहरणस्वरूप तफसीह, हदीस तथा कलमा के श्रेष्ठ ज्ञाता था।[2] यद्यपि कुरान ग्रन्थ में इनकी विशेषता के सम्बन्ध में अधिक वर्णन नहीं है। तत्पश्चात् इनके कार्यों तथा स्वरूपगत विशेषताओं के कारण यह अवधारणा बन गयी की जैसा पैगम्बर ने कहा कि 'उलेमा का सम्मान करो क्योंकि ये पैगम्बर के उत्तराधिकारी हैं, और जो इनका सम्मान करता है वह पैगम्बर तथा अल्लाह के प्रति सम्मान प्रकट करता है।[3] जनमानस उनसे उच्च नैतिक आचरण की आशा करता था, और उनकी गलतियों तथा दोषों की आलोचना एक साधारण व्यक्ति से कहीं अधिक क्रोधपूर्वक की जाती थी।

उल्मा वर्ग में उलेमा ए–दुनियाँ आते थे। प्रथम वर्ग अर्थात उलमा–ए– अखरत धार्मिक ज्ञान में विश्वास रखते थे तथा सांसारिक एवं राजनीतिक मामलो से स्वयं दूर रहते थे। जबकि उलमा–ए–दुनिया का दृष्टिकोण राजनीतिक तथा भौतिक सुख–सुविधा से परिपूर्ण रहता था वे धन–दौलत तथा सम्मान प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते थे।[4] सल्तनत काल के प्रारम्भिक वर्षों के दरम्यान प्रशासन में उलेमाओं का आंशिक प्रभाव था। प्रारम्भिक शासक ऐबक ने उलेमा का सम्मान किया परन्तु इस वर्ग द्वारा राजनीति में हस्तक्षेप के विवरण की जानकारी प्राप्त नहीं होती है।[5]

सुल्तान इल्तुतमिश ने अपने शासन काल में उलेमाओं के प्रभाव का प्रयोग अपने शासन की सुदृढ़ता हेतु राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया। उसने उलेमाओं का अनुचित हस्तक्षेप अपने शासनपर्यन्त स्वीकार नहीं किया। उसने इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि उलेमा वर्ग ने उसके शासन संचालन की आलोचना नहीं कि बल्कि वे उसके शासन–प्रशासन के समर्थक हो गए जिससे सुल्तान की राजनीतिक शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हुई।[6]

***शोधकर्ता विषय–इतिहास जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बिहार**

बलबन वंश के शासकों के क्रम में जिनमें गयासुद्दीन बलबन कैकूवाद तथा शम्सुद्दीन कैमूर्स थे। इनमें बलबन ने उलेमा वर्ग के उलेमा–ए–अखरत को प्रश्रय प्रदान करके सम्मान प्रकट किया। उसने अपने शासनकाल में प्रमुख पदों पर उलेमा को नियुक्त किया। उदाहरणस्वरूप मौलाना शम्सुद्दीन ख्वारिज्मी, काजी फखरूद्दीन नाकला, मौलाना बुर्दानुदीन तथा शेख निजामुद्दीन औलिया इत्यादि को शम्सुल–मुल्क पद प्रदान किया। इसके साथ ही उसके शासनकाल में तेरह उच्च कोटि के उल्मा मौजूद थे। जिनके साथ सुल्तान का सम्बन्ध मददगार बना रहा।[7]

यहाँ पर एक विशेष तथ्य दृष्टव्य है कि सुल्तान के साथ उलेमा वर्ग का सम्बन्ध मित्रवत तथा उदारता बने रहने के बावजूद उलेमा वर्ग को अपने प्रशासन में प्रभाव स्थापित करने में यह वर्ग असफल रहा। बल्कि बलबन उलेमा वर्ग को अपने नियंत्रणाधीन रहने पर विवश किया।

सल्तनत काल के शासको में अलाउद्दीन खिलजी पहला शासक था जिसने राजनीति (प्रशासन) में धर्म तथा उलेमा वर्ग के हस्तक्षेप पर पूर्णतया प्रतिबन्धित कर दिया। उसने स्पष्ट कहा कि उलेमा तथा अन्य धार्मिक व्यक्तियों तथा संस्थाओं का क्रियाकलाप केवल धर्म का कार्य तथा तत्सम्बन्धित शिक्षा प्रदान करना मात्र है। जबकि राज्य–प्रशासक का कार्य सहिष्णुतापूर्वक, धर्मनिरपेक्षता के साथ प्रशासन संचालित करना है। फलतः उसने उलेमा वर्ग तथा अन्य धार्मिक व्यक्ति जो न्यायिक सेवा में नियुक्त है का निर्धारित कर दिया कि इन लोगों का कार्य केवल निष्पक्ष होकर के न्याय प्रदान करना तथा अन्य धार्मिक विवादो में मध्यस्थता करके निर्णय देना है।[8] इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी अपने शासनकाल में उलेमा वर्ग को कड़े नियम के नियंत्रणाधीन रखा। यद्यपि खिलजी वंश के अन्य शासको जैसे मुबारकशाह खिलजी तथा नासिरूद्दीन खुसरो शाह के शासन के समय उलेमा वर्ग ने शासन में हेतू प्रत्यनशील रहे।

तुगलक वंश के शासनकाल के प्रारम्भिक कुछ शासको के शासन में उलेमा वर्ग ने प्रशासन में मजबूत स्थिति प्राप्त कर ली थी, परन्तु मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में इस वर्ग की स्थिति सामान्य कर्मचारी की तरह हो गयी। उसने धर्म के स्थान पर तर्क का सहारा लिया। फलस्वरूप तर्क–वितर्क के पश्चात जो वास्तविक तथा सहिष्णुतापूर्ण कार्य का तत्व प्राप्त हुआ, उसके अनुसार वह प्रशासन संचालित करता था। उसने शासन कार्य को धर्म के कार्यों से पृथक कर दिया। डा0 ईश्वरी प्रसाद ने इस सम्बन्ध में कहा है कि सुल्तान के इस व्यवहार से उलेमा वर्ग के साथ उसका युद्ध अवश्यम्भावी था।[9] इस सम्बन्ध में वे आगे लिखते हैं कि सुल्तान मुहम्मद–बिन–तुगलक के आदर्शों तथा धर्मगुरूओं के बीच का यह एक सैद्धान्तिक संघर्ष था।[10] डॉ0 युसुफ हुसैन ने लिखा है कि सुल्तान ने उन्हें वही स्थिति में नियुक्त किया जिस पर राज्य के अन्य कर्मचारियों को नियुक्त किया था।[11]

सल्तनत काल में उलेमा वर्ग ने अपनी प्रभावशाली स्थिति प्रशासन में प्राप्त की। सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में। फिरोजशाह तुगलक एक धर्मान्ध शासक था। वह लगभग प्रत्येक कार्य उलेमा वर्ग के सलाह–मशविरा से करता था। वह उलेमाओं का अत्यधिक आदर–सम्मान करता था। जिसका प्रभाव यह हुआ की फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में उलेमा वर्ग की स्थिति प्रभावशाली बन गयी थी।[12]

सैय्यदों के शासनकाल में उलेमा वर्ग की प्रभावकारी बनी रही। इस वंश के शासक योग्यता में निष्क्रिय थे तथा शासन–प्रशासन में उनकी स्थिति प्रभावशाली तथा सुदृढ़ नहीं रही। फलस्वरूप उलेमा वर्ग ने अपनी स्थिति को पर्याप्त मजबूत बना ली थी।

उलेमा वर्ग की प्रभावशाली स्थिति लोदी वंश के शासकों के शासन काल में स्थिर रही। तीन लोदी वंश के शासको में सिकन्दर लोदी के शासन काल में उलेमा वर्ग की स्थिति शासन–प्रशासन में प्रभावपूर्ण बनी रही। सिकन्दर लोदी भी अपने प्रशासन का विशेषकर के धर्म और कानून, न्याय के मामलो में वह अधिकांश कार्य उलेमाओं के परामर्श पर ही करता था।[13] प्रसिद्ध शेख अब्दुल कुद्दुस के साथ सुल्तान तथा अमीरो के साथ अच्छे सम्बन्ध थे।[14]

इस शोध पत्र का सारांश यह है कि उलेमा वर्ग हिन्दुस्तान में मुस्लिमों के जनमानस के आध्यात्मिक और धार्मिक नेतृत्व कर रहे थे। वे कानून, धर्मशास्त्र, कुरान, तर्कशास्त्र के महान ज्ञाता माने जाते थे। इनके बारे में स्वयं पैगम्बर ने कहा कि उलेमा वर्ग पैगम्बर के उत्तराधिकारी हैं, संसार उलेमाओं की धर्मनिष्ठा के कारण ही अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। शरा के नियम–विधि उलेमा वर्ग के द्वारा ही समाज में क्रियान्वित किए जाते हैं। और ऐसी कार्यों को जो अवैध या जिनकी स्वीकृति शरियत द्वारा प्रदान नहीं की जाती है उनके द्वारा विरोध किया जाता है। फलतः इस्लाम इनके कारण ही दृढ़तापूर्वक अपनी विशेषताओं के कारण स्थापित है। प्रतिष्ठा और पद में उलेमा वर्ग अन्य लोगों, समुदायों से अधिक ऊँचे तथा सम्माननीय है, सुल्तानो की क्रम स्थिति उसके पश्चात आता है।

इस परिप्रेक्ष्य में जब उलेमा वर्ग के चरित्र, गुणो तथा उनके कार्यों पर दृष्टि पड़ती है तो, यह दृष्टिगोचर होता है कि उलेमा वर्ग ने उपयुक्त आदशों, विशेषताओं को प्रायः परित्याग कर दिया था। वे स्वयं न तो सदाचारी का कार्य कर रहे थे और न ही मुस्लिम जनमानस को सदाचार का नैतिकता के कार्य का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे। वे परिस्थितिवश अपने को स्वयं परिवर्तित होते रहते थे। जब सुल्तान की स्थिति कमजोर तथा शासन–प्रशासन भ्रष्ट तथा अराजकता से पूर्ण रहता तो ये उलेमा वर्ग अपनी सदाचारिता तथा अपनी धार्मिकतापूर्ण कार्यों को छोड़कर के धन–दौलत तथा ऊंचे–ऊँचे पदो पर नियुक्त होने हेतु प्रयत्नशील रहते थे वे इसमें सफल भी हो जाते हैं। जिससे वे शासन में अनैतिक धर्म सम्बन्धी कार्य को क्रियान्वित

करते थे। जिससे जनमानस में इनके प्रति सम्मान की भावना समाप्त हो जाती थी। इस सम्बन्ध में जैसा की इतिहासकार अमीर खुसरो ने कहा है कि वास्तविकता यह है कि इस पूरे काल में कुछ अपवादो को छोड़कर के अधिकांश उलेमा न तो धर्मनिष्ठ थे और न ही कर्मनिष्ठ। वे अपने सुदृढ़ एवं सदाचारपूर्ण आदर्शों को छोड़ दिए थें किन्तु वे अपनी प्रतिष्ठा सम्मान, तथा विशेषाधिकार के लिए निरन्तर संघर्ष कर रहे थे। उनका दंभ इतना बढ़ चुका था कि वे प्रायः दिल्ली सुल्तानो के विरूद्ध भी षडयंत्र करने का प्रयत्न करते थे। परन्तु अलाउद्दीन खिलजी तथा मुहम्मद बिन तुगलक जैसे शासको ने उलेमा वर्ग को अपने कड़े नियंत्रण में रखा।

In this view point, when we see character, quality and work of ulema caste, the we find that ulema caste has left all above rules, characteristics, etc. They were neither doing morality job nor teaching muslim public the path of work of morality obligation.

They were changing himself according to situation, wherever the situation of sultan gets weaker and full of governance corrupt and lawlessness then this ulema caste drop their morality and religious work to gets employed on big post and they done it successfully too. Due to that public's respect towards them had end. In this content a historian Amir Khusro had said that. In whole time the reality is ulemas is neither religious nor hardworking apart from some exceptions. They left strong morality and rules but continuously doing practice to achieve respects and rights. Their ego increased so much that they tried to plan conspiracy against Delhi Sultanat's. But Kings like Alauddin Khilji and Mohd. Bin Tuglaq had kept ulema caste under control.

संदर्भ सूची–

1. सं0–शिवकुमार गुप्त–मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृष्ठ–133
2. प्रो. अशोक श्रीवास्तव–दिल्ली सल्तनत का उत्थान एवं पतन, पृष्ठ– 676
3. के0एम0 अशरफ– हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन एवं परिस्थिति, पृष्ठ–100
4. सं0 शिवकुमार गुप्त–मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृष्ठ–134
5. प्रो0 अशोक श्रीवास्तव–दिल्ली सल्तनत का उत्थान एवं पतन, पृष्ठ–677
6. सं0–शिवकुमार गुप्त–मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति– पृष्ठ–137
7. प्रो0 अशोक श्रीवास्तव–दिल्ली सल्तनत का उत्थान एवं पतन, पृष्ठ–677
8. प्रो0 अशोक श्रीवास्तव–दिल्ली सल्तनत का उत्थान एवं पतन, पृष्ठ–678–679
9. डॉ0 ईश्वरी प्रसाद–हिस्ट्री आफ द कुर्रान्ह तुर्क इन इण्डिया, पृष्ठ–257
10. वही, पृष्ठ–259
11. के0एम0 अशरफ–हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन एवं उनकी परिस्थतियाँ, पृष्ठ–101
12. प्रो0 अशोक श्रीवास्तव–दिल्ली सल्तनत का उत्थान एवं पतन, पृष्ठ–680
13. वही, पृष्ठ–680
14. इरफान हबीब–मध्यकालीन भारत, भाग–7, पृष्ठ–61 मक्त–ए–अहमदी–मक्तू बाजे कुद्दसियाँ, पृष्ठ–23